2

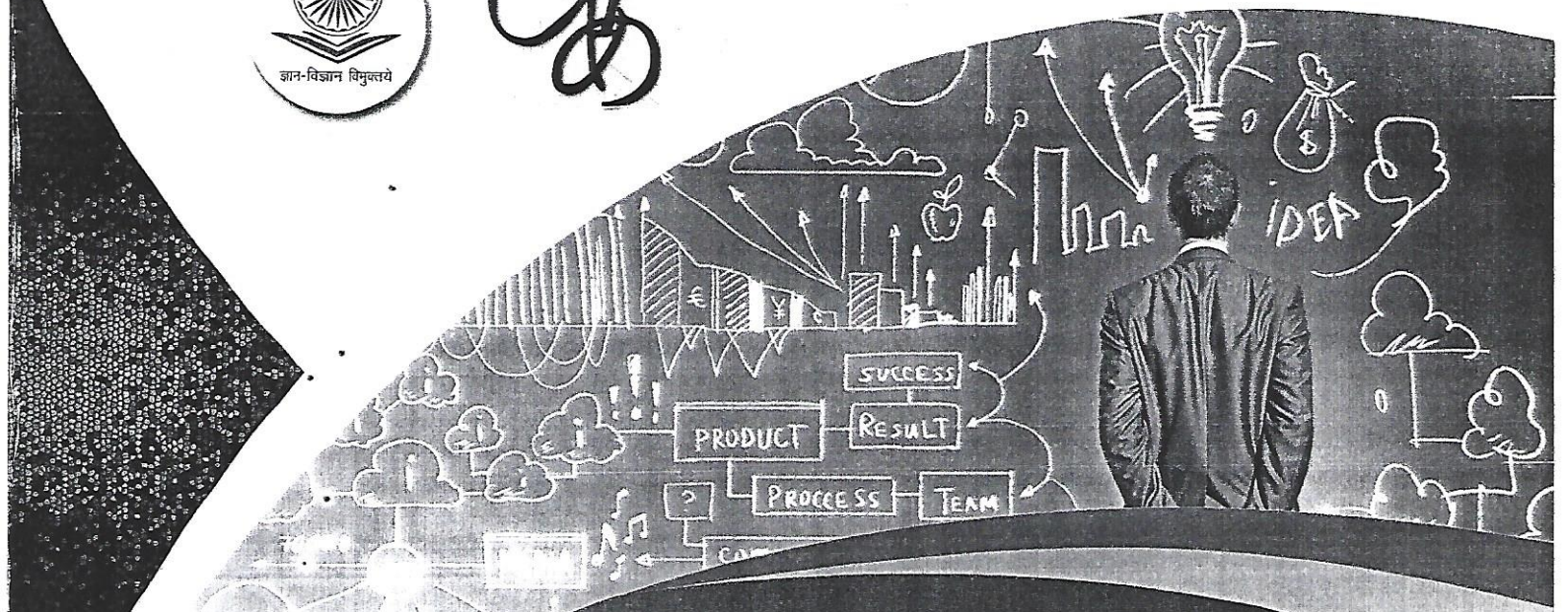

Peer Reviewed Referred and
UGC Listed Journal
(Journal No. 40776)

ISSN 2277 - 5730
AN INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY
QUARTERLY RESEARCH JOURNAL

June 2019

AJANTA

Volume-VIII, Issue-II
April - June - 2019
Marathi / Hindi

IMPACT FACTOR /
INDEXING 2018 - 5.5
www.sjifactor.com

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

Ajanta
Prakashan

VOLUME - VIII, ISSUE - II - APRIL - JUNE - 2019
AJANTA - ISSN 2277 - 5730 - IMPACT FACTOR - 5.5 (www.sjifactor.com)

११. विश्वशांति और आनंदी जीवन के लिए : म. बुद्ध विचार

प्रा. डॉ. एम. बी. बिराजदार

" आज दुनिया के करोडो आदमी
सह रहे है सर्दी, धूप और नमी ।
जिंदगी का एक भी साधन नहीं
उम्र तपता धूप है सावन नही ।।

विश्व को शांति का देनेवाले भगवान बुध्द के अनमोल विचारों में जीवन के तमाम अर्थ छिपे हुए है, जिनसे हर प्रकार के सवालों का जवाब प्राप्त हो जाते है । बुध्द ने कोई अलग तरह का संदेश नहीं दिया, जिसके लिए किसी भी प्रकार का विधि-विधान करने की जरूरत पडे दरअसल बुध्द का संदेश आत्मसात करने से मात्र जीवन सुखमय और शांतिपूर्ण हो जाता है, क्योंकि बुध्द कहते हैं, अपनी बुध्दी को जगावो, खुद सोचो, समझो, क्या उचित और क्या अनुचित है, इस के लिए किसी की राय मश्वरे की जरूरत नहीं है ।

किसी ने भगवान बुध्द से पूछा, जहर क्या है? बुध्द ने बहुत सुंदर जवाब दिया, हर वो चीज जो जिंदगी में आवश्यकता से अधिक होती है वही जहर है । फिर चाहे वो ताकत हो, धन हो, भूख हो, लालच हो, अभिमान हो , आलस हो, प्रेम या घृणा हो, महत्वाकांक्षा हो, आवश्यकता से अधिक जहर ही है । इस जहर ने ही आम आदमी के जीवन का सावन छीन लियां है और वह आजीवन धूप में तप रहा है । प्रा.बापू गायकवाड के शब्दो में, " तथागत बुध्द ने जो धम्म बताया उसमें किसी प्रकारका अध्यात्म नहीं है, तत्कालीन समाज के सामने जो समस्याएँ निर्माण हो गयी थी उसका हल इन समस्याओंमे है, उन्होंने उस काल में जिस पध्दति सें समस्या का हल किया और समाज को सन्मार्ग पर चलने के लिए प्रवृत्त कर, दुःखमुक्त किया उसी पध्दति से आज परिवारिक और सार्वजनिक जीवन में निर्माण समस्या को मिटाने के लिए बुध्द के स्वातंत्र्य , समता, बंधुता, भाईचारा, करूणा और शील आदि तत्वों का स्वीकार करना होगा । "[1]

विश्व आज' जिन समस्याओं से गुजर रहा है, अकाल महामारी, पर्यावरण असंतुलन, हिंसा, युध्द, विनाश, शस्त्रों की स्पर्धा आदि वातावरण देखते है तो तब बुध्द के विचार बहुत ही प्रासंगिक लगते हैं । भारत में तो सम्राट अशोक का जीवन युध्द से बुध्द की यात्रा का उत्तम प्रतीक है । खुशी युध्द में नहीं, खुशी हमारे दिमाग में है, खुशी पैसों से, ताकद से खरीदी गई चीजों में नहीं बल्कि खुशी इस बात में है कि, हम कैसा महसूस करते हैं, कैसा व्यवहार करते है और दूसरे के व्यवहार का कैसा जवाब देते हैं इसलिए असली खुशी हमारे मस्तिष्क में है । मनुष्य को अतित के बारें में नहीं सोचना चाहिए और न हीं भविष्य की चिंता करनी चाहिए । हमें वर्तमान समयपर ध्यान केंद्रित करना चाहिए यही खुशी का मार्ग है । मनुष्य को अपने शरीर स्वस्थ नहीं है तो आपकी सोच और मन भी स्वस्थ और स्पष्ट नहीं होंगे । सभी गलत कार्य मन में ही जन्म लेते है । अगर आप का मत परिवर्तित हो जाय तो मनमें गलत कार्य करने का विचार ही जन्म नहीं लेगा। डॉ. सदानदं मोरे के शब्दो मे -" तथागत बुध्द के काल में पंचशील तत्वों की जितनी जरूरत थी उससे भी ज्यादा आज है और हमेशा के लिए रहेगी । आज आधुनिक

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad

बुध्द के अनुसार, बुराई को बुराई से कभी खत्म नहीं किया जा सकता, इसलिए बुराई को सीधे बुराई से समाप्त करने से अच्छा प्रेम का सहारा लेना चाहिए। प्रेम हमेशा बुराई को समाप्त करता है।

7) खुशियाँ बाँटने से बढती है

बुध्द कहते है कि, जिस प्रकार एक जलता हुआ दीपक हजार दीपक जलाकर प्रकाश फैला सकता है और ऐसा करने से उसकी रौशनी पर असर नहीं पडता है। इसी तरह अपनी खुशियों को दूसरों के साथ बांटने से वह भी बढती है इसलिए सबके साथ हँसी-खुशी बांटनी चाहिए।

इस प्रकार हम जो कुछ भी है वो हमने आजतक क्या सोचा इस बात का परिणाम है। यदि कोई व्यक्ति बुरी सोच के साथ बोलता या काम करता है, तो उसे कष्ट ही मिलता है, यदि कोई व्यक्ति शुध्द विचारों के साथ बोलता या काम करता है, तो उसकी परछाई की तरह खुशी उसका साथ कभी नहीं छोडती। डॉ.एस.एस.गाठाळ के शब्दो में - "धम्मपद में गौतम बुध्द कहते है, जीवन में सब से लाभदायक बात आरोग्य और सबसे मौल्यवान धन सोच और संतोष है। लोभ और धनसंचय हानिकारक है, कर्म नैतिक व्यवस्था का आधार है यह मानना ही धम्म है।" [4]

धम्म आचरंण का विषय है, इसको मानने के लिए भगवान को मानने की आवश्यकता नहीं, चाहो तो मानो, चाहो तो ना मानो तुमारी मर्जी। आपके पास जो कुछ भी है बढा- चढ़ाकर मत बताइए और ना ही दूसरों से इर्षा कीजिए, जो दूसरों से ईर्षा करता है उसे मानसिक शांति नहीं मिलती। डॉ.सुरजित सिंह के शब्दों मे -" आज हमारी संपूर्ण मानव सभ्यता को यह विचार करने की आवश्यकता हैं कि हम अपनी आनेवाली पीढ़ियों को कैसी दुनिया छोडकर जा रहे हैं जिस तरह की विविधता भरी मनोरम, सुरम्य और संदुर प्राकृतिक संसाधनों से भरी दुनिया हमारे पूर्वजों ने हमारे लिए छोडी थी, आज वह वैसी बिल्कुल नही है। हमने पिछली एक-दो शताब्दी से प्राकृतिक संसाधनों का इतनी निर्ममता से दोहन किया है कि आज हमारी इस खूबसूरत दुनिया की हालत बहुत चिंताजनक है। हम सब स्वाथ्री व स्वकेंद्रीत हो गये है कि हमने अपने खुद के लिए और उद्योगपतियों व पूंजी

पतियों के उपभोग और विलासितापूर्ण जीवन जीने के लिए प्राकृतिक संसाधनों की खुली लूट की छूट दी है।" [5]

परिणामस्वरूप हमारी पूरी दुनियापर संकट पैदा हो गया है और समस्त जगत का जीवन संकट में पड गया है। प्राकृतिक वातवावरण बिगडने से वन्य प्राणियों का मानव बस्तियों की ओर पलायान और संघर्ष शुरू हुआ है। इसके कारण हमारे वन्य जीवन कई बार संघर्ष में लोगों के द्वारा अपनी जान भी गवांए हे है। प्राकृतिक संसाधनों की खुली लूट के कारण जलवायु परितवर्तन भी बडे पैमाने पर हुआ है। इससे पृथ्वी का तापमान भी बढ रहा है, जिसके कारण हिमनद और ग्लेशियर लगातार पिघल रहे है। समुद्र का जल स्तर प्रतिवर्ष बढ रहा है, अगर बढते तापमान का यही हाल रहा तो आगे आनेवाले सौ वर्षो में समुद्र का जल स्तर बढ जाएगा जिसके कारण दुनिया भर में समुद्र के किनारे के बसे शहर डूब जायेंगे।

हमारी पृथ्वी के बढते तापमान के कारण अब मौसम भी स्थिर नही रहा गया है। बहुत सारी प्रजातियाँ जो बढते तापमान के कारण नष्ट हो गयी है, इन में सैकडों की संख्या में जीव जंतुओ ; कीडों-मकोडे, समुद्री जीवों और तितलियों का जीवन संकट ग्रस्त अवस्था में है। बढते उद्योग और प्रदूषण के कारण मधुमख्खियाँ, तितलियाँ, उल्लू, चमदागड और अन्य छोटी चिडियाँ अपना रास्ता भूल रही है। इनका रास्ता भटकने और असमय मरने के कारण पेड पौधों में परागण नहीं हो पायेगा। इससे फसलों का बीज नहीं बनेगा और हमारे सामने खाद्यान्य संकट पैदा हो जाएगा।

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

यदि यही हालथ रहा तो हमारी कृषि उपज पर इसका बहुत गंभीर परिणाम पडेगा। इसका समाधान हम सबको मिलकर निकालना होगा। आज अगर हम सक्रीय नहीं हुए तो आनेवाली पीढ़ियों को एक बढते तापमान वाली गर्म होती पृथ्वी और तरह-तहर के सुंदर रंगीन वन्य जीव-जंतुओं के विहीन दुनिया छोडकर जाएगे, जिसमें पीने का पानी भी दूषित होगा और सांझ लेनेवाली स्वच्छ आबोहवा तो भयंकर रूप से दुषित होगी। यह सब संकट हमारी बढती तृष्णाआं का ही परिणाम है। डॉ. सुरजितकुमार सिंह के शब्दों में - "भगवान बुध्द ने जब अपना पहला उपदेश धम्मचक्रप्रवर्तन के रूप में सारनाथ में दिया था तो उनकी चिंता के केंद्र में मानवीय लालच इच्छा-तृष्णा ही थी। इसीलिए उन्होंने हमारी बढती तृष्णा को अपने दूसरे आर्यसत्य में स्थान दिया था। लालच चाहे वह प्राकृतिक संसाधनों की जो खुली लूट के रूप में हो, जो हमारी बढती तृष्णा का ही परिणाम है। इसलिए हम अपनी उपभोग और विलासितापूर्ण जीवन जीने की आवश्यकताओं को कम करे। तभी हम अपनी इस खूबसूरत दुनिया को अपनी आनेवाली पीढियों को सकुशल दे पायेंगे।" [6]

हम यदि प्राकृतिक संसाधनो की खुली लूट की बात करते हुए इस पर निष्पक्षता से विचार करें तो यह आज कइ तरह की मानवीय संघर्ष की समस्याएँ भी पैदा कर रही है। इस संघर्ष के कारण दुनिया के कुछ हिस्सो मे अशांति, भय और आतंक का माहौल उत्पन्न हुआ है। सबसे बडी समस्या लोगांके द्वारां-अपने -अपने

देशों मे निर्वाचित सरकारों की ओर से है, जो उद्योगपतियों व पूंजीपतियों के लिए प्राकृतिक संसाधनों की खुली लूट की छूट देती है। इससे वहॉ मानवीय संघर्ष पैदा होता है और उस देश में व्याप्त गरीबी, भूखमारी, अशिक्षा, बुनियादी स्वास्थ्यगत सुविधाओं का अभाव और बढता भ्रष्टाचार हिंसात्मक रूप में हमारे सामने आता है। जिन देशाों में ये समस्याएँ है, वहाँ मानवीय संघर्ष हिंसा और अशांति के रूप में हमारे सामने है। यह संघर्ष आतंकवाद और अन्य तरह की हिंसात्मक गतिविधयों के रूप में हमारे सामाने आता है, जो हमारी संपूर्ण मानव सभ्यता के लिए बहुत ही त्रासदपूर्ण है।

इसमें कुछ लोग अपने हित व दबाव समुह बनाकर और भोले भाले लोगों को बहकाकर आपस में खून-खराबा करने पर आमादा रहते है। इससे बडी मानवीय त्रासदी और क्या होगी कि मानव ही मानव का खून का प्यासा है। " आतंकवादर चाहे वह किसी भी रूप में हो, एक सभ्य समाज के लिए खतरा ही है। आज हम दुनिया के कई देशो और हिस्सो में देखते है कि आतंकवाद बढता ही जा रहा है। डॉ-सुरजितकुमार सिंह के शब्दो में - बुध्द के शांति, शील और सदाचार पर आधारित मैत्रीपूर्ण उपदेशों की। जिस प्रकार पूरी दुनिया में आज युध्द, हिंसा अराजकता, नफरत और असहिष्णुता का माहौल व्याप्त है और यह बढता ही जा रहा है, ऐसे में आवश्यकता है बौध्द धम्म दर्शन की मैत्री, करूणा, प्रज्ञा, शील की , जो समस्त जीव-जगत और सभी प्राणियों के प्रति व्यापक कल्याण की भावना रखती है। जिसमें युध्द नफरत, हिंसा और अराजकता के लिए कोई स्थान नहीं है। इसलिए भगवान बुध्द के समसत उपदेश और उनकी पैतांलिस वर्षो की चारिका संपूर्ण जैव-जगत, प्राणी जगत, मनुष्यता एवं समाज के लिए उच्च मानवीय मूल्यों, सदाचार, नैतिकता एवं विश्वबंधुत्व की कल्याणकारी भावना को स्थापित करती है।" [7]

यब बात ठीक है कि बढती गरीबी, भूखमारी, आशिक्षा, बुनियादी स्वास्थ्यगत सुविधाओं का अभाव भ्रष्टाचार और धर्माधता इन सब बुराईयों की जननी है। यह बहुत ही शर्म और चिंता की बात है कि आज 21 वी सदी में करोडो लोगो को दुनिया भर के विभिन्न देशों और हिस्सो में भूखे पेट सोना पडता है। हमारी सरकारे आज भी लोगों को भरपेट भोजन उपलब्ध

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist. Osmanabad

नहीं करवा पायी है । आज हम देखते हैं कि हमारे समाज में कई तरह की समस्याएँ होने के बावजूद हम उन सब बुराईओं से नहीं लड़ते है, बल्कि आपस में ही खून-खराबा

करने पर तुले रहते है । जब तक हम अपने अंदर की बुराईयों, कमजोरियों और आसक्तियों से नहीं लडेंगे, तब तक हम उन सामाजिक बुराईयों से नहीं लड़ पायेंगे ।

स्वामी विवेकानंद ने भगवान बुध्द का गौरव करते हुए कहा था कि, " धर्म औरी संस्कृति के क्षेत्र में बुध्द ने संघ का निर्माण कर गणतंत्र प्रणाली का समर्थन किया । इस प्रकार बुध्द ने भारत में ही नहीं, सारे विश्व के समक्ष बहुजन -संस्कृति का एक उत्कृष्ट आदर्श प्रस्तुत किया । धर्म, समाज एवं संस्कृति के क्षेत्र में मनुष्य के महत्व को स्थापित कर उसकी विराट शक्ति के उद्बोधन के लिए सम्पूर्ण विश्व का आव्हान किया ।

मनुष्य की इस श्रेष्ठता के सामने सभी को श्रध्दावनत होना पडा । इस पृथ्वीपर बुध्द का उत्पन्न होना मनुष्यता के उत्कर्ष का प्रकाश था । " [8]

इस प्रकार भगवान गौतमबुध्द मानवतावादी थे । मनुष्य जीवन आनंदायी, शांति और सौंदर्यपूर्ण करने के लिए विश्व को आज भी उनके विचारों की आवश्यकता है । आज भी उनके विचार प्रासंगिक है ।

संदर्भ

1) प्रा. गायकवाड बापू - 'सामाजिक प्रश्न और बुध्द , बुध्द पौर्णिमा विशेष दै. सकाळ'
2) डॉ. मोरे सदानंद - 'पंचशील तत्व' , बुध्द पौर्णिमा विशेष, दै. सकाळ
3) डॉ. गाठाल एस. एस. 'भारतीय इतिहास व संस्कृति', कैलाश पब्लिकेशन औरंगाबाद प्रथम संस्करण 2007 पृ.316
4) वही
5) डॉ. सिंह सुरजिकुमार आज युध्द नहीं बुध्द की आवश्यकता प्रभारी निदेशक, बौध्द अध्ययन केंद्र वर्धा विश्वविद्यालय, वर्धा 4 मई 2015.
6) वही
7) वही
8) डॉ. सांळुखे आ.ह. ' सर्वोत्तम भूमिपुत्रः गोतम बुध्द ' लोक प्रकाशन , सातारा प्रथम संस्करण 24 मई 2007 पृ.प्रस्तावना

Principal
Jawahar Arts, Science & Commerce College,
Andur Tal. Tuljapur Dist, Osmanabad